सरसों में अधिक पैदावार कैसे लें

कृषि कुंभ (दिसंबर, 2022),
खण्ड 02 भाग 07, पृष्ठ संख्या 36–38

सरसों में अधिक पैदावार कैसे लें

रत्नाकर पाठक[1], अरविंद कुमार त्रिपाठी[2] एवं राम प्रकाश[3]

शोध छात्र कीट विज्ञान विभाग[1], शोध छात्र कृषि वानिकी[2], शोध छात्र शस्य विज्ञान विभाग[3]

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

ईमेल – mr.ratnakar.1160@gmail.com

परिचय

सरसों का वैज्ञानिक नाम ब्रेसिका कम्प्रेसटिस है ,आज हमारे देश में तेल के दामों में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही हैं, बिना तेल के भोजन का पकाना एवं स्वादिष्ट होना असंभव सा होता है, कम पैदावार के कारण सरसों के दामों में लगातार वृद्धि को देखने को मिल रही है ऐसे में हमारे बीच यह सवाल उठता है कि हम कम क्षेत्रफल में ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कैसे लें आखिर वह कौन सी तकनीकी है जिसका उपयोग करके हम ज्यादा से ज्यादा उत्पादन ले और ज्यादा से ज्यादा मार्केट में उसको हम बेंच सकें।

सरसों हमारे देश में सिंचित तथा असिंचित दोनों क्षेत्रों में प्रमुखता से उगाई जाती है, तिलहन का एक अच्छा स्रोत माना जाता है, तिलहन के उत्पादन में सरसों प्रमुख मानी जाती हैं।

धान के कटने के बाद अक्टूबर माह में सरसों की बुवाई अच्छी मानी जाती है क्योंकि जल्दी बोने से आगे चलकर के माहू जैसे कीटों के प्रभाव को रोका जा सकता है।

सरसों की खेती करने से पूर्व किसान अपने मिट्टी की जांच नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र या मृदा प्रयोगशाला या कृषि विश्वविद्यालय में अवश्य करा ले, क्योंकि मृदा की जांच से आपकी मृदा में उपस्थित पोषक तत्वों की कमी और जिन तत्वों की अधिकता है ,पता चल जाएगा और आप की लागत कम हो जाएगी।

दूसरी बात ध्यान देने योग्य है कि आपका क्षेत्र सिंचित में आता है या असिंचित में अगर सिंचित क्षेत्र में हैं तो आप किस्म

का चुनाव करते समय सिंचित क्षेत्र की किस्म का चुनाव करें और अगर आपके क्षेत्र में पानी की उपलब्धता नहीं है तो ऐसी दशा में आप कम पानी चाहने वाली फसल किस्म का चुनाव करें।

हमारे जीवन में सरसों का उपयोग

हमारे दैनिक जीवन में सरसों का उपयोग बहुत ही ज्यादा है ग्रामीण अंचल में तो

भोजन की अमुक सामग्री मानी जाती है तथा भोजन के साथ–साथ सरसों के पेड़ का उपयोग विभिन्न प्रकार के रखरखाव ,सर्दियों में अलाव के रूप में, कम कमाई के व्यक्ति इसका उपयोग सर्दियों में पाले को रोकने एवं गर्मियों में गर्म हवा को रोकने के लिए अपनी झोपड़ी में इस्तेमाल करते हैं।

ग्रामीण अंचल में सरसों के तेल का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है, सर्दी लगने पर इस तेल का प्रमुखता से इस्तेमाल किया जाता है इसमें पाए जाने वाले सल्फर के कारण इसमें प्रतिरोधकता क्षमता बढ़ाने के भी गुण होते हैं इसलिए बच्चों से लेकर बड़ों तक इस तेल का उपयोग शरीर के स्वास्थ्यवर्धक के रूप में किया जाता है।

सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय

किसान भाई सरसों की बुवाई के लिए सितंबर या अक्टूबर माह को चुन सकते हैं क्योंकि इस माह में सरसों का बीज बोने से सरसों में तेल की मात्रा तथा उसकी पैदावार दोनों बढ़ जाती है, देरी के समय में किसान 15 नवंबर तक सरसों की बिजाई कर सकते हैं।

बीज की गुणवत्ता एवं बीज दर

बोया जाने वाला बीज अच्छी गुणवत्ता वाला होना चाहिए, बीज स्वस्थ ,गोल, दानेदार तथा जिसकी अंकुरण क्षमता उच्च हो वह बीज बोने के लिए उपयुक्त माना जाता है, सामान्यता बीज दर 4 से 6 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से रखा जाता है।

बीज उपचार

सरसों में विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए कार्बेंडाजिम 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित किया जाना चाहिए।

उन्नत किस्में

सीता, भागीरथी ,वरुणा ,शेखर, कृष्णा, वैभव, वरदान, रोहिनी, सौरभ, लक्ष्मी, प्रकाश, दुर्गामानी आदि।

बुवाई की विधि

बुवाई अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है पैदावार का, इसलिए बीज की बुवाई करते समय उचित दूरी का ध्यान रखें ,सामान्यता सरसों की बुवाई में पौध से पौध के बीच 10 सेंटीमीटर की दूरी तथा पंक्ति से पंक्ति के बीच में 30 सेंटीमीटर की दूरी रखी जाती है ,जहां तक संभव हो सके बीज को 5 सेंटीमीटर की गहरी बोना चाहिए।

खरपतवार का नियंत्रण

खरपतवार के नियंत्रण के लिए पेंदीमैथलीन 30म्ब का प्रयोग बीज बोने के लगभग तीसरे चौथे दिन कर देनी चाहिए एवं समय–समय पर निराई गुड़ाई एवं खरपतवार निकासी का काम होना अति आवश्यक है।

सरसों में सिंचाई

जल सरसों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है इसे कब और कितना देना चाहिए यह उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है सामान्यतः 35 से 40 दिन पर प्रथम सिंचाई एवं 75 से 80 दिन बाद द्वितीय सिंचाई पौधों की अच्छी वृद्धि एवं विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

सरसों में खाद प्रबंधन

सरसों में उर्वरक प्रबंधन का महत्वपूर्ण उपयोग है, समय पर उर्वरक ना केवल उत्पादन बढ़ाता है परंतु तेल की मात्रा में भी वृद्धि होती है साधारणतया सरसों में खेत की जुताई के वक्त 4 से 5 टन सड़ी हुई गोबर की खाद के साथ–साथ 25 किलो नत्रजन 24 किलो फास्फोरस और 24 किलो पोटाश के साथ–साथ 16 किलोग्राम गंधक मिला दे यह ध्यान रहे की नाइट्रोजन की आधी मात्रा बिजाई के समय तथा आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के उपरांत टॉप ड्रेसिंग के रूप में दिया जाना चाहिए।

सरसों के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

आरा मक्खीः आरा मक्खी पत्तियों को तेजी से खाती हैं जिससे अनेक छेद दिखने लगते हैं आरा मक्खी के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए मेलाथियान 50EC का प्रयोग कारगर माना जाता हैं।

चेपा या माहू : महू का प्रभाव फसलों को अत्यंत नष्ट करने वाला होता है इनके जब अटैक ईटीएल लेवल से ऊपर हो तो इनका नियंत्रण अत्यंत आवश्यक हो जाता है इनके नियंत्रण के लिए डाई–मैथोएट 30 EC इसी का प्रयोग अच्छा माना जाता है।

कटाई

जब संपूर्ण खेत के फलियों का अधिकतर भाग पीला पड़ने लगे तो यह परिपक्वता का सूचक होता है और किसान भाइयों को उसकी कटाई कर देनी चाहिए।